नियमसार १६८ कलश। १६८ कलश।

अथ विविधविकल्पं पञ्चसन्सारमूलं,
शुभमशुभसुकर्म प्रस्फुटं तद्विदित्वा।
भव-मरण-विमुक्तं पञ्च-मुक्ति-प्रदं यं,
तमह-मभिनमामि प्रत्यहं भावयामि।।१६८।।

[श्लोकार्थः] पाँच प्रकार के (द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव और भाव के परावर्तनरूप) संसार का मूल... द्रव्य का परावर्तन, क्षेत्र का, काल का, भव का और भाव का, ऐसा जो संसार का मूल। इन पाँच प्रकार के परिवर्तन में संसार का मूल **विविध भेदोंवाला**

शुभाशुभ कर्म है... पाँच प्रकार के परावर्तनरूप संसार का मूल **विविध भेदोंवाला शुभाशुभ...** एकरूप शुभाशुभ नहीं। शुभ-अशुभभाव विविध प्रकार के (होते हैं)। शुभ भी असंख्य प्रकार के और अशुभ भी असंख्य प्रकार के (होते हैं)। वे सब भाव पंच परावर्तन का-भटकने का मूल है। आहाहा! द्रव्य के संयोगों में अनन्त बार आया, क्षेत्र की उत्पत्ति में अनन्त बार आया, काल के समय-समय में अनन्त बार उत्पन्न हुआ, एक-एक भव में अनन्त बार उत्पन्न हुआ और भाव में अनन्त बार असंख्य प्रकार के शुभ-अशुभ अनन्त बार हो गये। इन सब पाँच का मूल शुभाशुभ कर्म है। है न?

पाँच प्रकार के संसार का मूल विविध भेदोंवाला शुभाशुभ कर्म है, ऐसा स्पष्ट जानकर,... ऐसा प्रत्यक्ष जानकर... आहाहा! आत्मा के ज्ञान को इस शुभाशुभ विकार का कारण भाव, उससे भिन्न जानकर। तब शुभाशुभ कर्म को स्पष्ट जाने। अपना स्वभाव प्रत्यक्ष करे, तब वह इस शुभाशुभ कर्म को स्पष्ट जाने। **जो जन्ममरण रहित है...** कैसा है प्रभु आत्मा? शुद्ध आत्मा जो वस्तु है, वह तो जन्म-मरणरहित है। वस्तु है, उसमें जन्म भी नहीं और मरण भी नहीं। वह तो पर्याय में जन्म-मरण है। वस्तु है, वह तो जन्म-मरणरहित ही है।

और पाँच प्रकार की मुक्ति देनेवाला है... द्रव्य-क्षेत्र-काल-भव-भाव पाँच प्रकार हैं न? उनसे छुटकारा करनेवाला है। **पाँच प्रकार की मुक्ति देनेवाला है...** यह अपेक्षा से कथन है। वह तो है, वह है। पाँचवाँ भाव (परमपारिणामिकभाव) जो है, वह है परन्तु उसका आश्रय करे, उसे मुक्ति देनेवाला है, ऐसा कहने में आता है। बाकी पंचम भाव, वह कहीं मुक्ति देनेवाला नहीं है। उसमें कोई पर्याय नहीं है परन्तु उसका आश्रय करने से पाँच प्रकार अर्थात् द्रव्य-क्षेत्र-काल-भव-भाव की **मुक्ति देनेवाला है...** आहाहा! एक ओर कहना कि द्रव्य, पर्याय को करता ही नहीं। द्रव्य, पर्याय को करता नहीं। यहाँ कहते हैं कि यह पाँच प्रकार की मुक्ति देनेवाला द्रव्य है अर्थात् पाँच प्रकार की जो मुक्ति है, उस स्वरूप ही वह है। पाँच प्रकार : द्रव्य-क्षेत्र-काल-भव-भाव से मुक्तस्वरूप ही है। इसलिए वह मुक्ति देनेवाला है, ऐसा कहने में आता है। आहाहा! पद्मनन्दि के कलश बहुत उत्कृष्ट है। पद्मनन्दि मुनि थे, आचार्य नहीं थे और एक व्यक्ति को मुनि का मान्य नहीं है। मुनि का मान्य नहीं और आचार्य का मान्य क्योंकि उसमें कठिन बात है न? उसकी

मानी हुई व्यवहार की बातों का तो भुक्का उड़ जाता है। इसलिए वह ऐसा कहता है कि मुनि की (बात मान्य) नहीं है। एक व्यक्ति ऐसा कहता है। आहाहा!

ऐसा जो शुद्धात्मा, उसके आश्रय से पाँच प्रकार की मुक्ति—द्रव्य-क्षेत्र-काल-भव-भाव की होती है। इसलिए वह मुक्ति का देनेवाला है, ऐसा मैं कहना चाहता हूँ, कहते हैं और **उसे (-शुद्धात्मा को) मैं नमन करता हूँ...** मुक्ति को देनेवाला है, उसे मैं नमन करता हूँ। यह पर्याय है। पंचम भाव त्रिकाली भाव, वह तो शुद्ध चैतन्यघन, आनन्दकन्द अकेला पवित्रता का पिण्ड है। उसमें कोई पर्याय का प्रवेश या पर्याय का व्यय उसमें है नहीं परन्तु उसका आश्रय पर्याय लेती है तो वह पर्याय आश्रय लेती है, इसलिए शुद्धात्मा स्वयं मुक्ति देनेवाला है, ऐसा कहने में आता है। समझ में आया इसमें? शुभकर्म मुक्ति देनेवाला नहीं है, पर्याय मुक्ति देनेवाली नहीं है; शुद्धात्मा मुक्ति देनेवाला है - ऐसा कहते हैं।

मुमुक्षु : आश्रय होता है।

पूज्य गुरुदेवश्री : आश्रय होता है अर्थात्... आहाहा! वह तो है, वह है परन्तु जब ख्याल में आया, तब उसने मुक्ति दी, ऐसा कहने में आता है। ख्याल में आया कि यह चीज़ तो परमात्मस्वरूप, भगवत्स्वरूप शुद्ध चैतन्यघन है। आबाल-गोपाल जीव का, बालक से लेकर वृद्ध, स्त्री-पुरुष के देह, वह तो जड़ के हैं। अन्दर विकल्प है, वह कर्मजाल है। अब वह वस्तु जो है, वह मुक्ति की देनेवाली है, ऐसा कहना है। मुक्ति का देनेवाला... द्रव्य-क्षेत्र-काल-भव-भाव पाँच प्रकार। वह मुक्ति का देनेवाला, इस पाँच प्रकार के संसार का मूल शुभाशुभ कर्म... आहाहा! पाँच प्रकार के परिवर्तन का मूल शुभाशुभ कर्म और पाँच प्रकार की मुक्ति का देनेवाला शुद्धात्मा - यह दो बातें ली हैं। आहाहा! समझ में आया?

पाँच प्रकार के भटकने का मूल शुभाशुभ कर्म। परिभ्रमण की जो पर्याय होती है, वह भी स्वतन्त्र है। वह कहीं शुभाशुभ कर्म से होती है? कर्म तो जड़-पर है, परन्तु यहाँ तो दोनों का सम्बन्ध कहना है। वह शुभाशुभ कर्म ही परिभ्रमण का कारण है और मुक्ति का कारण शुद्धात्मा है। बस, यह। आहाहा! शुद्धात्मा को जो पाँच प्रकार की मुक्ति देनेवाला है। पाँच प्रकार कौन से? द्रव्य-क्षेत्र-काल-भव-भाव। पाँचों से छुटकारा देनेवाला है। अर्थात् पाँचों ही प्रकार उसमें नहीं है। है नहीं, इसलिए उसके आश्रय से पाँच प्रकार से

मुक्ति होती है, इसलिए उसे मुक्ति देनेवाला है, ऐसा कहा है। ऐसा सूक्ष्म है।

उसे (-शुद्धात्मा को) मैं नमन करता हूँ... आहाहा! यह पर्याय है। मुक्ति देनेवाला है, ऐसा जो कहा है, वह द्रव्य है परन्तु नमन करता हूँ और जो मुक्ति है, वह पर्याय है। आहाहा! मुक्ति देनेवाला जो है, वह द्रव्यस्वभाव है। यहाँ पाँच परावर्तन का परिभ्रमण शुभकर्म है। दोनों निमित्त से कथन है। आहाहा! संक्षिप्त कथन करना है, उसमें दूसरा क्या करे? ऐसे **(-शुद्धात्मा को) मैं नमन करता हूँ...** ऐसा जो पाँच प्रकार के परिवर्तन से मुक्ति देनेवाला, ऐसा जो शुद्धात्मा, उसे मैं नमन करता हूँ। वह पर्याय है। **और प्रतिदिन भाता हूँ।** आहाहा! प्रतिदिन अर्थात् समय-समय मेरी भावना तो उस पंचम भाव की ओर ही है। समझ में आया?

त्रिकाली जो ज्ञायकभाव शुद्ध सच्चिदानन्द प्रभु स्वयं परमेश्वररूप ही है। द्रव्य है, वह तो परमेश्वरस्वरूप ही है, त्रिकाल निरावरण है। ऐसे भगवान आत्मा को—मुक्ति देनेवाला है, ऐसे को मैं नमन करता हूँ। आहाहा! ऐसा जो शुद्धात्मा, उसमें नमता हूँ अर्थात् उसमें मेरा झुकाव है, ऐसा कहते हैं। शुद्ध चैतन्य भगवान सदा नित्य निरंजन निराकार, जिसमें पर्याय का भी स्पर्श नहीं। आहाहा! ऐसा जो शुद्धात्मा, वह मुक्ति का देनेवाला है और उसे **मैं नमन करता हूँ और प्रतिदिन (उसे मैं) भाता हूँ।** ऐसा कहने पर कहते हैं, किसी समय भी पंचम भाव के आश्रय बिना नहीं रहता। आहाहा!

मोक्ष का लेनेवाला किसी एक भी समय पंचम भाव के आश्रय बिना नहीं होता। आहाहा! चाहे जितने प्रसंग हो, समकिती युद्ध में खड़ा हो, तथापि अन्दर आश्रय तो द्रव्य का है। आहाहा! ऐसा उपदेश! शान्तिभाई! इसमें कहीं हीरा-माणिक में ऐसा कुछ नहीं आता। आहाहा! यहाँ तो अभी तो बाहर में भी कहाँ आता है? सम्प्रदाय में भी गड़बड़ उठी है। आहाहा!

यह महाप्रभु के गुणगान हैं। चैतन्यस्वरूप भगवान, वह मुक्ति का देनेवाला है। आहाहा! उसके आश्रय से मुक्ति होती है न? इसलिए वह देनेवाला है, ऐसा कहने में आता है। आहाहा! और शुभ-अशुभकर्म तो जड़ हैं। परिभ्रमण की पर्याय है, वह तो अरूपी विकारी है, तथापि वह शुभाशुभ कर्म पाँच परावर्तन का कारण है, तब भगवान आत्मा पाँच प्रकार की मुक्ति का कारण है। आहाहा! अन्दर कितना भरा है! ऐसा है। अब उसमें दया,

दान, व्रत, भक्ति और उनसे धर्म (होता है) - अभी तो पूरा यह चला है। इससे विरुद्ध कहे तो यह नहीं। आहाहा!

वह प्रभु मुक्ति का देनेवाला है, उस प्रभु को मैं नमन करता हूँ और उसे प्रतिदिन, उसे मैं प्रतिक्षण भाता हूँ। कोई भी समय उसके आश्रय बिना या उसकी भावना बिना नहीं है। आहाहा! ऐसा मार्ग है। प्रतिदिन अर्थात् प्रत्येक समय। आहाहा! प्रत्येक दिन, प्रत्येक दिन अर्थात् प्रत्येक समय। शुद्ध भगवान पूर्णानन्द का नाथ, उसे मैं प्रतिदिन नमन करता हूँ और भाता हूँ। उसमें ही मेरा झुकाव है और उसकी ही मुझे भावना है। आहाहा! शुभाशुभ कर्म की बात तो छोड़ दी। वह तो शुभपरिणाम भी परावर्तन का कारण है, तब भगवान मोक्ष का कारण है। आहाहा! १६८ श्लोक (पूरा) हुआ।

श्लोक-१६९

(मालिनी)

अथ सुललितवाचां सत्यवाचामपीत्थं,
न विषयमिदमात्मज्योतिराद्यन्तशून्यम्।
तदपि गुरुवचोभिः प्राप्य यः शुद्धदृष्टिः,
स भवति परमश्री-कामिनी-कामरूपः ।।१६९।।

(वीरछन्द)

इस प्रकार यह आत्म ज्योति जो आदि अन्त से रहित अहो।
सुमधुर अथवा सत्य वचन का विषय कदापि नहीं कहो॥
किन्तु उसे पा गुरु-वचनों से शुद्ध दृष्टिवाला होता।
परमश्रीरूपी कामिनी का वल्लभ वह निश्चित होता॥१६९॥

[श्लोकार्थः] इस प्रकार आदि-अन्त रहित ऐसी यह आत्मज्योति सुललित (सुमधुर) वाणी का अथवा सत्य वाणी का भी विषय नहीं है; तथापि गुरु के वचनों द्वारा उसे प्राप्त करके जो शुद्ध दृष्टिवाला होता है, वह परमश्रीरूपी कामिनी का बल्लभ होता है (अर्थात् मुक्तिसुन्दरी का पति होता है)॥१६९॥

श्लोक -१६९ पर प्रवचन

१६९ (कलश)।

अथ सुललितवाचां सत्यवाचामपीत्थं,
न विषयमिदमात्मज्योतिराद्यन्तशून्यम्।
तदपि गुरुवचोभिः प्राप्य यः शुद्धदृष्टिः,
स भवति परमश्री-कामिनी-कामरूपः ।।१६९।।

आहाहा! श्रीमद् ने ऐसा कहा है (कि) सत् सरल है, सत् सर्वत्र है, सत् की प्राप्ति सहज है। उसे बतलानेवाले गुरु चाहिए। वह यहाँ लिया है। बतलानेवाले गुरु चाहिए। पात्रता तो इसकी स्वयं की है।

[श्लोकार्थः] इस प्रकार आदि-अन्त रहित ऐसी यह आत्मज्योति... जिसकी आदि नहीं, शुरुआत नहीं। है, उसकी शुरुआत क्या? आहाहा! कर्ता तो उड़ा दिया, परन्तु अनादि स्वयं शुद्ध-शुद्ध अनादि है। **आदि-अन्त रहित...** भविष्य का अन्त और भूत की आदि रहित चीज़ है। **ऐसी यह आत्मज्योति सुललित (सुमधुर) वाणी का...** मीठी मधुर वाणी का भी वह विषय नहीं है। आहाहा! **सुललित (सुमधुर) वाणी का...** तथा एक ओर कहेंगे, गुरु से मिलेगा। गुरु के वचन द्वारा प्राप्त करके। और वचन वहाँ लिये। यहाँ इनकार किया। वह **सुललित (सुमधुर) वाणी का अथवा सत्य वाणी का भी विषय नहीं है;...** आहाहा! मीठी मधुर वाणी या सत्य वाणी... आहाहा! सत्य वाणी का भी विषय नहीं है। आहाहा! ऐसा यह भगवान मधुर वाणी, सत्य वाणी, सच्ची वाणी। सच्ची वाणी वीतराग की... आहाहा! उस वाणी का भी यह प्रभु विषय नहीं है। आहाहा!

मुमुक्षु : वाच्य-वाचक सम्बन्ध है न?

पूज्य गुरुदेवश्री : यह निमित्त से कथन आता है। अभिधेय-अभिधान आता है न पहले? शुरुआत में। निमित्त से है। बाकी तो वचनातीत, विकल्पातीत है। सत्य वाणी का भी विषय नहीं है, ऐसा कहा न? अकेली वाणी का विषय नहीं है, ऐसा नहीं कहा। सच्ची वाणी का भी विषय नहीं है। आहाहा! वाणी जड़; प्रभु चैतन्य आनन्द है। इशारा से बात

होती है। क्योंकि अपनी जाति से वाणी विरुद्ध है। वह सच्ची वाणी हो तो भी उसका यह विषय नहीं है। आहाहा! सवेरे तो आया था कि द्रव्यश्रुत संसार से मुक्त होने में समर्थ है। द्रव्यश्रुत आया था न? वह निमित्त से कथन है। यहाँ कहते हैं, सत्यवाणी का विषय नहीं है। यहाँ कहा कि वह वाणी वहाँ काम ही नहीं करती। आहाहा! वाणी से अतीत है, वाणी से भिन्न है। आहाहा!

मुमुक्षु : कथंचित वक्तव्य कहलाता है।

पूज्य गुरुदेवश्री : कहलाता है। सप्तभंगी है न? सैंतालीस नय आये हैं न? सैंतालीस नय। नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव। नाम से भी ज्ञात होता है, ऐसा वहाँ कहा। आहाहा! नाम एक सत्य नाम, सत्य स्थापना, सत्य द्रव्य और सत्य भाव से ज्ञात हो ऐसा है। सैंतालीस नय, प्रवचनसार। यहाँ निषेध करते हैं। क्या अपेक्षा है, वह जानना चाहिए। वहाँ निमित्त की अपेक्षा से कथन है। यहाँ स्वतन्त्र... वाणी का विषय क्या? वाणी जड़, स्वयं चैतन्य भगवन्त; वाणी अचेतन मिट्टी और यह परमात्मस्वामी, परमात्मा का धनी। आहाहा! वह सत्यवाणी का विषय कर सकता नहीं। आहाहा! किस अपेक्षा से कथन है, उसे वैसा जानना चाहिए न।

सत्य वाणी का भी... भी कहा न? अर्थात् क्या? कि मधुर वाणी का विषय तो नहीं। मीठी-मधुर वाणी का विषय नहीं परन्तु **सत्य वाणी का भी...** एक दूसरा यह भी। ऐसा... **सत्य वाणी का भी विषय नहीं...** आहाहा! वीतराग की वाणी सत्य वाणी है। आहाहा! उसका भी विषय नहीं है। आहाहा! और समयसार में ऐसा बतलाया कि द्रव्यश्रुत से जो प्राप्त हो सके, ऐसा सामर्थ्य है। द्रव्यश्रुत में ऐसा सामर्थ्य है। ऐसा बतलाया न? भाई! द्रव्यश्रुत का सामर्थ्य ऐसा है, तो भी उसके ज्ञान से भी वह प्राप्त नहीं हो सकता। उससे भी मिला नहीं। द्रव्यश्रुत मिला, सत्श्रुत मिला, सत्श्रुत कान में पड़कर ज्ञान भी उस प्रकार का परलक्षी हुआ। परलक्षी। आहाहा! तथापि उस वाणी से मिले, ऐसा नहीं है। वहाँ वाणी का सामर्थ्य कहा। आया था न? भाई! वाणी का सामर्थ्य, वाणी में सामर्थ्य है। द्रव्यसूत्र में द्रव्यश्रुत का सामर्थ्य है। उससे भी वह प्राप्त नहीं हुआ, ऐसा आया था न? आहाहा! क्या उसकी वाणी! अलौकिक वाणी है।

मुमुक्षु : परलक्षी ज्ञान में भी कुछ ख्याल आवे?

पूज्य गुरुदेवश्री : परलक्षी ज्ञान में कुछ नहीं होता। वह पराधीन पर में जाता है। जिसे समझने के लिये परलक्षी ज्ञान की भी अपेक्षा नहीं है। यहाँ सत्य वाणी का भी विषय नहीं है। वहाँ कहा कि द्रव्यश्रुत का सामर्थ्य है। शक्करवाला दूध पीने से सर्प का जहर मिटे ऐसा है, तथापि उससे भी इसका जहर मिटा नहीं। आहाहा! आया था न? शक्करवाला दूध। सर्प अपने आप तो जहर छोड़ता नहीं परन्तु शक्करवाला दूध पीकर भी छोड़ता नहीं। आहाहा! इसी प्रकार आत्मा अपने आप तो छोड़ता नहीं परन्तु जो द्रव्यसूत्र है, समर्थ है... आहाहा! उसे ज्ञान कराने में निमित्त रीति से समर्थ है। उससे भी छूटा नहीं। द्रव्यश्रुत का ज्ञान किया, धारणा की, ग्यारह अंग पढ़ा, उसमें यह बात आ गयी। पंचम भाव ऐसा है, अमुक ऐसा है, यह सब (आ गया) परन्तु यह बात धारणा में रही। आहाहा! अन्तर में स्पर्श किया नहीं, अन्तर्मुख देखा नहीं। जिसे सत्यवाणी की भी अपेक्षा नहीं। वहाँ समर्थ कहा था। यहाँ वाणी की अपेक्षा नहीं, ऐसा कहते हैं। आहाहा! सवेरे कुछ और दोपहर में कुछ।

हमारे फावाभाई कहते थे। फावाभाई। बुद्धि साधारण, (वे कहते) मस्तिष्क काम नहीं करता अर्थात् स्थूल बुद्धि। उनका लड़का अभी करोड़पति हो गया है। वे सब हैं साधारण। यह तो पुण्य की बातें हैं। पुण्य, वह निमित्त है। वह पैसा वहाँ आनेवाला था, वह उपादान की पर्याय के कारण से आया है। सातावेदनीय का निमित्त है। निमित्त उस पैसे को खींचकर नहीं लाता। आहाहा! मात्र उसका निमित्त कौन होता है, यह बताया है। इसके बुद्धिबल से पैसा आवे, ऐसा नहीं है, यह बताने के लिये सातावेदनीय के उदय से पैसा आता है। अन्तराय के क्षयोपशम से आता है, ऐसी बात की है। बाकी तो वे परमाणु वहाँ आनेवाले थे... आनेवाले थे... आनेवाले थे... आनेवाले थे। उनकी क्रियावतीशक्ति से वहाँ आनेवाले थे, वे आये। आहाहा! ऐसा है।

कहा कि द्रव्यश्रुत में, जैसे शक्करवाले दूध में जहर छोड़ने की ताकत है, तो सर्प अपने आप जहर नहीं छोड़ता, शक्करवाले दूध से छोड़ा नहीं। इसी प्रकार अपने आप तो समझा नहीं परन्तु जो द्रव्यश्रुत वीतराग की वाणी, द्रव्यश्रुत, हों! सर्वज्ञ की वाणी। इसके अतिरिक्त किसी वाणी को यहाँ वाणी नहीं कहा। कल्पित बनाये हुए शास्त्र, वह वीतराग की वाणी नहीं है। आहाहा!

मुमुक्षु : भूतनैगमनय से निमित्त कहा जाता है।

पूज्य गुरुदेवश्री : वे मिथ्याशास्त्र निमित्त भी नहीं हैं।

मुमुक्षु : सच्चे शास्त्र।

पूज्य गुरुदेवश्री : सच्चे। यह तो कहा न! उसका जहर छुड़ाने में समर्थ है। संसार छुड़ाने में वह समर्थ है, ऐसी द्रव्यश्रुत में सामर्थ्य है, ऐसा कहा। ऐसा कहा न? भाई! यहाँ इनकार करते हैं। क्या अपेक्षा है? बापू! आहाहा! वह सत्यवाणी का विषय नहीं है। वह तो अन्तर के अनुभव का विषय है। राजमल्ल टीका में यह लिखते हैं। उसे किस प्रकार कहना? किसी प्रकार से कह सकने की विधि नहीं लगती परन्तु ऐसा संक्षिप्त कहें कि ज्ञान अन्दर एकाग्र होता है, उतनी बात करते हैं। बस! लो। वस्तु है, वह स्वयं अन्दर एकाग्र होता है, इतनी बात करते हैं। कलश टीका में है। राजमल्ल की टीका है न?

मुमुक्षु : स्वयं तो स्वयं का माप निकाल सकता है न?

पूज्य गुरुदेवश्री : शब्द से नहीं निकालता, ज्ञान से निकालता है। वीतराग की वाणी से भी नहीं निकालता, तो भी यह वापस कहेंगे।

सत्य वाणी का भी विषय नहीं है; तथापि... है न? आहाहा! **सत्य वाणी का भी विषय नहीं है; तथापि गुरु के वचनों द्वारा उसे प्राप्त करके...** और वचन आये। निमित्त से कथन है। इसका अर्थ यह कि उसे गुरु के वचन मिलना चाहिए। प्रभु! तू पूर्ण है, परमात्मा है, नाथ! भगवान है। तुझे यह क्या हुआ? ऐसे गुरु के वचन आना चाहिए, ऐसा कहते हैं। आहाहा! तू अपूर्ण नहीं, विकारी नहीं, तुझे किसी ने रोका नहीं। तू तुझे समझे बिना रुका हुआ है। अब तू तुझे तेरी शक्ति से छोड़। तेरा स्वरूप तो परमात्मा है न? आहाहा! जिस क्षण में ज्ञात हो, तब वह तो परमात्मा ही है। वह अपने संग से ज्ञात होता है परन्तु उसे बतलानेवाले गुरु का वचन देशनालब्धि चाहिए, इतनी बात है। आहाहा!

श्रीमद् ने ऐसा कहा है, 'सत् सरल है, सर्वत्र है, परन्तु बतलानेवाले गुरु चाहिए।' ऐसा लिखा है। उनके पत्र में है। अपेक्षा से कथन है। आहाहा! गुरु के वचन, केवली के वचन अनन्त बार मिले, तथापि स्वयं को प्राप्त नहीं किया। परन्तु प्राप्त करे, उसे गुरु की वाणी होती है। आहाहा! **गुरु के वचनों द्वारा...** देखा? इसमें इनकार करते हैं कि **सत्य वाणी का भी विषय नहीं है; तथापि गुरु के वचनों द्वारा...** उसे बतलानेवाले, ईशारा

करनेवाले चाहिए, ऐसा कहते हैं। तू प्रभु है, भगवन्त है—ऐसा ईशारा करनेवाले चाहिए। इतनी बात है। आहाहा!

तू परमात्मा है, प्रभु! पूर्ण परमात्मा परमेश्वर में और तेरी ताकत में कुछ कमी नहीं है। आहाहा! ३८ गाथा में कहा है न? अपने परमेश्वर को भूल गया। ३८ गाथा में आता है। आहाहा! अपना परमेश्वर, उसे स्वयं भूल गया है। यह भूल स्वयं मिटावे परन्तु उसे गुरु के वचन होते हैं, तथापि उन गुरु के वचनों की ओर का जो लक्ष्य है, वह ज्ञान अभी परलक्षी है परन्तु उसमें ईशारा आया था कि तू प्रभु है, पूर्ण है, परमात्मा है, परमेश्वर है, भगवन्त है। आहाहा! पंचम भाव परमात्मस्वरूप ही है। इतनी वाणी आयी थी, उसका इतना ईशारा यहाँ प्राप्त करने में बात की है। आहाहा!

गुरु के वचनों द्वारा उसे प्राप्त करके... आहाहा! दूसरे प्रकार से कहें तो यह कैसे रखना? कि गुरु उसके आत्मा के तत्त्व को ही बताते हैं। उसे राग से लाभ होगा या इससे लाभ होगा, यह नहीं बताते, इतना अन्तर डालने के लिये बात की है। क्या कहा? गुरु इसे वीतरागता बतलाते हैं। गुरु इसे शुभकर्म से कर और मेरी भक्ति कर तो तुझे लाभ होगा, ऐसा गुरु नहीं बतलाते। आहाहा! क्या इनकी शैली! क्या वचन की रचना! द्रव्यश्रुत की रचना भी देखो तो सही। आहाहा!

गुरु के वचनों द्वारा उसे प्राप्त करके... वचनों द्वारा उसे प्राप्त करके। इसका अर्थ यह कि गुरु ने परमात्मस्वरूप ही बतलाया है। हमारे से होगा और राग से होगा, शुभकर्म करने से होगा, हमारी भक्ति करने से होगा - ऐसा गुरु ने कहा नहीं। इसलिए गुरु की वाणी से प्राप्त करके, ऐसा कहा है। गुरु ने इसे वीतरागता से तुझे तेरा (आत्मा) मिलेगा (ऐसा बतलाते हैं)। आहाहा! यह आत्मावलोकन में आता है। मुहू, मुहू। गुरु बारम्बार वीतरागता की ही बात करते हैं। आत्मावलोकन में गाथा आती है। वीतराग... वीतराग... वीतराग... राग की गन्ध की बात नहीं कि शुभक्रिया का राग है, इसलिए कुछ तुझे अन्दर अशुभ में से शुभ में आने पर तुझे अन्तर में प्राप्त करने में सरलता होगी, ऐसा भी नहीं। आहाहा! यहाँ ऐसे गुरु के वचन कहे हैं। समझ में आया? आहाहा!

सुललित (सुमधुर) वाणी का विषय नहीं अथवा सत्य वाणी का भी विषय नहीं है;... आहाहा! तथापि **तथापि गुरु के वचनों द्वारा...** इनका वचन इस कारण से है कि

गुरु इसे वीतरागस्वभाव बतलाते हैं। मुझसे प्राप्त होगा या राग से प्राप्त होगा–ऐसा गुरु नहीं कहते। आहाहा!

मुमुक्षु : तो फिर गुरु क्या कहते हैं।

पूज्य गुरुदेवश्री : वे वीतरागभाव कहते हैं। तू परमात्मा है – ऐसा कहते हैं। तुझे मेरी भी अपेक्षा नहीं है – ऐसा वे कहते हैं।

मुमुक्षु : तू परमात्मा है – ऐसा कहते हैं।

पूज्य गुरुदेवश्री : यह तो हुआ, इसका अर्थ हुआ कि इसे पर की अपेक्षा नहीं है। ऐसा इसे वीतराग... चैतन्य वीतरागमूर्ति प्रभु अतीन्द्रिय आनन्द का कन्द है। तुझे राग की मन्दता से लाभ होगा, वह चीज़ तू नहीं है। तुझे राग की अपेक्षा से प्राप्त हो, ऐसा तू नहीं है। तू तो वीतरागभाव से प्राप्त हो, ऐसा तू है। उसमें वीतरागभाव से प्राप्त हो, ऐसा है—ऐसा कहने पर, हमारी ओर के लक्ष्य से भी प्राप्त हो – ऐसा नहीं है। यह भी उनके वचन में आ जाता है। आहाहा! गजब बात की है न।

एक तो मधुर वचन और... आहाहा! सत्यवाणी का विषय नहीं। और कहते हैं... स्याद्वाद वीतराग की वाणी, अपेक्षा से बात है। उसका हेतु यह है। गुरु इसे किसी प्रकार से दूसरा पहलू न बताकर तू परमात्मा है, (यह बताते हैं)। तेरी नजर के आलस्य से बाकी रह गया है, बस – ऐसा बताते हैं। ऐसा बतानेवाले गुरु यही बताते हैं। गुरु, व्यवहार से निश्चय होता है, राग से यह होता है – ऐसा बतावे, वे गुरु नहीं हैं – ऐसा कहते हैं। आहाहा! **गुरु के वचनों द्वारा उसे प्राप्त करके...** इसका अर्थ यह है। आहाहा! गुरु के वचन ऐसे होते हैं। तुझे हमारी भक्ति से होगा, यह गुरु के वचन नहीं हैं। आहाहा! तुझे राग की मन्दता से... यह कौन नहीं आया?

मुमुक्षु : कान्तिभाई जोडियावाला।

पूज्य गुरुदेवश्री : हाँ, जोडियावाला। क्यों नहीं आये?

समझ में आया इसमें? एक ओर कहते हैं कि वीतराग की, मुनियों की सच्ची वाणी से (भी) प्राप्त नहीं होता और दूसरे प्रकार से कहते हैं कि गुरु के वचनों को प्राप्त करके प्राप्त होता है। आहाहा! वे होते हैं और हेतु यह है कि उनकी वाणी में... आहाहा!

वीतरागता.. वीतरागता.. वीतरागता.. प्रभु! तू वीतरागस्वरूप है। वीतरागदशा से उसकी प्राप्ति होती है। पर के लक्ष्य से और पर की अपेक्षा से तुझे प्राप्ति नहीं होती। ऐसा गुरु का वचन होता है, यह बतलाने के लिये उसके द्वारा प्राप्त होता है - ऐसा कहने में आया है। आहाहा!

मुमुक्षु : स्वयं शास्त्र पढ़कर समझ सकता है या नहीं?

पूज्य गुरुदेवश्री : गुरु का उपदेश चाहिए। पहले कहा न!

सत्य वाणी का भी विषय नहीं... परन्तु गुरु का कहने का आशय यह है कि वह सीधे परमात्मा को ही बतलाते हैं। वह गुरु की वाणी कहलाती है। वह वाणी वीतराग के शास्त्र की है। आहाहा! सत्य वाणी का भी विषय नहीं, तो भी गुरु उसका गुरुपना बतलाते हैं। तू परमेश्वर है, तू प्रभु है, तू भगवत्स्वरूप है, तू अनादि, अनन्त अचल ज्योति विराजमान शाश्वत् टंकोत्कीर्ण तत्त्व है। आहाहा! क्या उनकी शैली! दोनों वाणी की एक ओर ना करते हैं। ललित वाणी और सत्य वाणी की ना करते हैं। एक ओर द्रव्यश्रुत का सामर्थ्य है कि उसे ज्ञान प्राप्त करे परन्तु फिर भी जैसे शक्करवाला दूध जहर को छोड़े, तो भी जहर छोड़ता नहीं। ऐसा बतलाने के लिये वाणी उसे मिली, तो भी वह छोड़ता नहीं। वाणी में कहने का आशय जो है, उसे पकड़ता नहीं और उसे छोड़ता नहीं। आहाहा! अपने पक्ष को कहीं रोकता है। अन्दर में कहीं अटकता है। इतना करूँ तो होगा... इतना करूँ तो होगा... इतना करूँ तो होगा। गुरु ऐसा नहीं कहते। आहाहा!

मुमुक्षु : गुरु वचन तो कहते हैं।

पूज्य गुरुदेवश्री : कहा न, वचन का निमित्त कहा परन्तु निमित्त में ऐसा बतावें, ऐसे वे वचन हैं। इसकी जो परमात्मस्वरूप स्थिति है, उसे वे बताते हैं। उतना एक वचन है, तथापि उससे प्राप्त नहीं होता। यहाँ इसके पाता है, ऐसा कहने में कि उन्होंने वीतरागता बतायी है, इसलिए वीतरागता को प्राप्त हुआ, इसलिए उनसे प्राप्त हुआ, ऐसा कहने में आता है क्योंकि दूसरे सराग से, राग से और शुभकर्म से, व्यवहार करते-करते होगा, यह बतलानेवाले वे गुरु नहीं हैं। आहाहा! यह दिगम्बर मुनि। उनकी वाणी तो देखो! आहाहा! **गुरु के वचनों द्वारा...** आहाहा! इसका अर्थ यह कि गुरु इसे एकदम वीतरागता ही बतलाते हैं। हमारे शब्दों की भी तुझे आवश्यकता नहीं, हमारी वाणी की भी तुझे अपेक्षा नहीं, ऐसा

वे बतलाते हैं। आहाहा! साक्षात् भगवत्स्वरूप है। टंकोत्कीर्ण ऐसा का ऐसा चिद्घन। आहाहा! चिद्घन वज्र, जिसमें विकल्प का प्रवेश नहीं – ऐसा चिद्घन वज्र तू है – ऐसा गुरु बतलाते हैं, इसलिए गुरु की वाणी से प्राप्त होता है, ऐसा कहने में आता है। आहाहा! समझ में आया? आहाहा!

सवेरे तो यह कहा कि इसका जहर मिटाने को द्रव्यश्रुत में भी समर्थ है परन्तु उससे भी टालता नहीं। शक्करवाला दूध जहर को टालने में समर्थ है, वह भी टालता नहीं। इसी प्रकार वीतराग की वाणी, वह अज्ञान का जहर उतारने में समर्थ है। आहाहा! तथापि वह भी सुना, धारणा में किया परन्तु अन्दर में प्रवेश किया नहीं। धारणा में बात रखी, धारणा में बात रखी तो ग्यारह अंग अनन्त बार धारण किये, ऐसा कहते हैं। समझ में आया? आहाहा! गम्भीर वाणी है, भाई!

जो शुद्ध दृष्टिवाला होता है,... गुरु के वचनों द्वारा उसे प्राप्त करके जो शुद्ध दृष्टिवाला होता है,... देखो! क्या कहा? इसमें न्याय दिया कि गुरु ने शुद्धदृष्टि करने की ही बात इसे बतायी है, इसलिए शुद्धदृष्टिवाला होता है। आहाहा! **गुरु के वचनों द्वारा उसे प्राप्त करके जो शुद्ध दृष्टिवाला होता है,...** इसका अर्थ कि गुरु ने इसे शुद्धदृष्टि की ही बात की है। त्रिकाली परमात्मा को प्राप्त कर, वहाँ दृष्टि कर। मौजूद चीज़ पड़ी है। है, उसकी अस्ति। प्राप्त की प्राप्ति है। दूसरा कोई इसका उपाय नहीं है। ऐसे **गुरु के वचनों द्वारा उसे प्राप्त करके जो शुद्ध दृष्टिवाला होता है,...** वह शुद्धदृष्टि उन्होंने बतायी थी। आहाहा! समझ में आया?

गुरु के वचनों द्वारा उसे प्राप्त करके जो शुद्ध दृष्टिवाला होता है,... आहाहा! बतलानेवाले को भी पहचाना; बतलानेवाले की वाणी कैसी होती है, उसे भी पहचाना और वाणी में से कहे हुए भाव को भी पहचाना। वह शुद्ध दृष्टिवाला होता है। उस शुद्ध दृष्टि से उन्होंने कथन बताया था। त्रिकाली भगवान को पकड़, ऐसा कहा था तो वैसा प्राप्त करके शुद्ध दृष्टिवाला होता है। आहाहा! जो गुरु ने कहा था, तद्नुसार होता है। आहाहा! ऐसी बात! अब अभी विरोध करते हैं। व्यवहार से होता है। इस व्यवहार से न हो तो ऐसा होगा। वीतराग की वाणी निमित्त है और उसके कारण ज्ञान होता है। निमित्त से ज्ञान न माने, वह मिथ्यादृष्टि है।

मुमुक्षु : दिव्यध्वनि से होता है।

पूज्य गुरुदेवश्री : दिव्यध्वनि से होता है। यहाँ तो कहते हैं, गुरु की वाणी से नहीं होता परन्तु गुरु की वाणी दिव्यध्वनि में यह आया। परमात्मा है, उसे प्राप्त कर, बस। यह आया। इसलिए उसे वाणी से प्राप्त हुआ, ऐसा कहने में आया है क्योंकि वाणी में यह आया था, वैसा वह प्राप्त हुआ, इसलिए वाणी से प्राप्त हुआ, ऐसा कहने में आया? आहाहा!

मुमुक्षु : वाणी से प्राप्त नहीं हुआ था।

पूज्य गुरुदेवश्री : वह नहीं होता परन्तु उनने बतलाया है, वह हुआ। स्वयं ने किया, वही बतलाया था। शुद्ध दृष्टिवाला होता है, ऐसा कहा न? शुद्ध दृष्टि अर्थात् त्रिकाल की दृष्टि, त्रिकाली शुद्ध आत्मा की दृष्टि। आहाहा!

मुमुक्षु : प्राप्त कर जाए तो वाणी का उपकार लागू पड़ता है।

पूज्य गुरुदेवश्री : तब तो वह निमित्त कहलाती है। यहाँ तो वजन गुरु ने क्या कहा, यह वजन है। वह शुद्ध दृष्टिवाला हुआ, यह उन्होंने कहा था। इस बात पर वजन है। वाणी से होता है, ऐसा वचन नहीं है। लालचन्दभाई! आहाहा! कहने का आशय यह है। पण्डितजी! आहाहा!

मुनिराज पद्मप्रभमलधारिदेव का आशय यह है। जो बतलाया था, उसे प्राप्त हुआ। प्राप्त हुआ, वह बतलाया था; इसलिए वह शुद्ध दृष्टिवाला हुआ। शुद्ध दृष्टि करानी थी। वाणी में उन्हें शुद्ध दृष्टि ही करानी थी। त्रिकाली की दृष्टि कर, त्रिकाली को मान, त्रिकाली को अनुभव कर, त्रिकाली को देख, त्रिकाली की प्रतीति कर, यह उनकी वाणी में आया था। आहाहा! वह शुद्ध दृष्टिवाला होता है। आहाहा! ऐसा कहकर यह भी कहा कि गुरु यह बतलावें, ऐसे गुरु मिलना चाहिए। ऐसा कहते हैं। इसके पुण्य के योग से भी ऐसे गुरु इसे मिलना चाहिए कि जो यह वीतरागता की दृष्टि बतावे। त्रिकाली है, उसकी दृष्टि कर। सब भूल जा। मेरी ओर का लक्ष्य भूल जा। हम कहते हैं, उसका ज्ञान हो, उस ज्ञान का लक्ष्य भी भूल जा। आहाहा!

वाणी का भी विषय नहीं है; तथापि... ऐसा कहा न? **तथापि गुरु के वचनों द्वारा उसे प्राप्त करके...** आहाहा! गजब बात की है। उसे गुरु ऐसे मिले हों कि जो शुद्ध दृष्टि कर,

यह एक ही बात की हो। यह बात मिली, इसलिए उसे प्राप्त करके निमित्त से कथन कहा। आहाहा! दूसरी लाख बात की बात हो, सब बात छोड़ दे। भगवान त्रिकाली है, उसकी दृष्टि कर, उसका आश्रय कर, उसका अवलम्बन ले तो प्रभु की प्राप्ति तुझे होगी। ऐसा कहा था, ऐसा इसे हुआ। समझ में आया? आहाहा!

जो शुद्ध दृष्टिवाला होता है,... देखा? गुरु के वचनों को प्राप्त करके भी न हो, यह प्रश्न यहाँ नहीं लिया। भाई! होता है। आहाहा! एक तो गुरु का वचन कैसा होता है और सुनकर प्राप्त करता ही है। यही कहा है न उसमें? (समयसार) पाँचवीं गाथा। **'तं एयत्तविहत्तं दाएहं अप्पणो सविहवेण'** कुन्दकुन्दाचार्य कहते हैं (कि) मेरे वैभव से स्व की एकत्वता और पर की भिन्नता बतलाऊँगा। इतना कहा, परन्तु **'जदि दाएज्ज पमाणं'** यदि तुझे बतलाऊँ तो प्रमाण करना। वहाँ ऐसी ही बात ली है। वह बात यह है। अनुभव करना। हाँ करके अकेला धारणा में रुकना नहीं। आहाहा! आता है न? भाई! **'पमाणं'** प्रमाण करना। प्रमाण अर्थात् अनुभव। आहाहा! बहुत बात की है, हों! वचनों का निषेध किया। सुललित मधुर वचन, सत्य वाणी का इनकार किया, ले, अब सत्य वाणी का भी इनकार किया, तब गुरु की वाणी कैसी असत्य होगी? परन्तु उस सत्य वाणी में यह बताया था, उसे प्राप्त हुआ। इसलिए उसे वाणी से प्राप्त हुआ, ऐसा कहने में आया है। आहाहा!

जो शुद्ध दृष्टिवाला होता है,... शुद्ध दृष्टि करने का ही कहा था। इसलिए शुद्ध दृष्टिवाला होता है। आहाहा! **वह परमश्रीरूपी कामिनी का बल्लभ होता है...** उसे केवलज्ञान की प्राप्ति होती है, ऐसा कहते हैं। पहले शुद्ध दृष्टिवाला होता है, ऐसा कहा। पश्चात् वह परमश्री रूपी कामिनी, परमश्री—लक्ष्मी, परमलक्ष्मी केवलज्ञान। आहाहा! दृष्टिवाला तो हुआ, अब **परमश्रीरूपी (केवलज्ञान का) कामिनी का बल्लभ होता है...** अर्थात् वह पर्याय प्राप्त होती है। **(अर्थात् मुक्तिसुन्दरी का पति होता है)** आहाहा!

विशेष कहेंगे.... (**श्रोता :** प्रमाण वचन गुरुदेव!)